प्रातःक्लास 27-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों के साथ रूहानी बाप रूह-रूहान कर रहे हैं। वा कहेंगे राजयोग सीखा रहे हैं। तुम आये ही हो बेहद के बाप से राजयोग सीखने। इसलिए बुधि चली जानी चाहिए बेहद के बाप तरफ। यह है परमात्म ज्ञान आत्माओं प्रित। भगवानुवाच शालीग्रामों प्रित। आत्माओं को ही सुनना है। इसलिए आत्म-अभिमानी बनना है। आगे तुम थे देह-अभिमानी। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही बाप आकर तुम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाते हैं। आत्म-अभिमानी और देह-अभिमानी का फर्क तुमसमझ गये हो। बाप ने समझाया है आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है। पढ़ती आत्मा है। शरीर नहीं। परन्तु देह-अभिमान होने कारण समझते नहीं हैं आत्मा पढ़ती है। समझते हैं शरीर पढ़ती है। शरीर ही पढ़ाती है। तुम बच्चों को जो पढ़ाने वाला है वह तो है निराकार। उनका नाम है शिव। शिव बाबा को अपना शरीर नहीं होता। और सभी आत्मायें कहेंगी मेरा शरीर। यह किसने कहा? आत्मा ने कहा यह मेरा शरीर है। बाकी तो वह सभी है जिसमानी पढ़ाईयाँ अनेक प्रकार के। उस में कितने सबजेक्ट्स होते हैं। मैट्रीक, बी०ए० आद2, कितने नाम हैं। इसमें तो एक ही नाम है। पढ़ाई भी एक ही पढ़ाते हैं। बाप ही आकर पढ़ाते हैं तो बाप को ही याद करना पड़े। हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। उनका नाम है शिव। ऐसे नहीं कि नाम-रूप से न्यारा है। यह जो कहते है नाम-रूप से न्यारा, सो जैसे मनुष्यों का नाम पड़ता है शरीर पर, तो कहेंगे फलाना, फलानी का शरीर, वैसे शिव बाबा का नहीं है। और तो सभी के शरीर के नाम आद हैं। एक ही निराकार बाप है जिसका नाम है शिव। आते हैं पढ़ाने तो भी नाम शिव ही रहता है। यह शरीर तो उनका नहीं है। भगवान एक ही होता है। 10-20 तो नहीं होता। वह है ही एक। फिर मनुष्य उनको 24 अवतार, इतना अवतार कहते आये हैं तो उनको कुत्ते-बिल्ले, ठिक्कर में भी कह देते। जैसे खुद भक्ति मार्ग में भटके हैं, बाप कहते हैं मुझे भी बहुत भटकाया है। ड्रामा अनुसार तो उनकी बात-चीत सभी शीतल है। समझाते हैं मेरे ऊपर सभी ने कितना [illegible] किया है। मेरी कितनी ग्लानी की है। मनुष्य कहते हैं हम निष्काम सेवा करते हैं। बाप कहते हैं मेरे सिवाय और कोई निष्काम सेवा कर न सके। जो करता है उनका फल मिलता है जरूर। अभी तुमको फल मिल रहा है। गायन भी है भक्ति का फल भगवान देंगे। क्योंकि भगवान है ज्ञान का सागर। भक्ति मार्ग के हैं सभी कर्म-काण्ड के शास्त्र। आधा कल्प तुम कर्मकाण्ड आद करते आये हो। अभी यह ज्ञान तो है पढ़ाई। पढ़ाई मिलती है एक ही बार। और एक ही बाप से। बाप पुरुषोत्तम संगम युग पर एक ही बार आकर तुमको पुरुषोत्तम बनाते हैं। फिर खुद चले जाते हैं। यह है ज्ञान। वह है भक्ति। आधा कल्प तुम भक्ति करते हो। अभी जो भक्ति नहीं करते हैं तो उन्हों को बहम पड़ता है पतानहीं भक्ति न करने से यह होता, यह मर पड़ते। बाप कहते हैं भक्ति से तुम दुर्गति को ही पाया है। कहते भी हैं आप आकर पतितों को पावन कर सदगति में ले चलो। भक्ति अलग है ज्ञान अलग है। भक्ति से रात आधा कल्प। फिर ज्ञान से दिन आधा कल्प। रामराज्य बेहद का तो रावण राज्य भी बेहद का कहेंगे। टाईम दोनों का एक ही है। भोगी होने कारण दुनिया की बुधि जास्ती होती रहती है। आयु भी कम हो जाती। मनुष्यों की बुधि जास्ती हो[illegible]ती। इसलिए कितने प्रबन्ध रचते हैं। तुम बच्चे जानते हो मनुष्यों की बुधि कम हो यह तो बाप का [illegible] है। यह कोई मनुष्य का काम नहीं। तो जानते भी नहीं हैं। तुम भी अभी जानते हो। इतनी इतनी बड़ी [illegible] है उनको कम करना बाप का ही काम है। बाप आते ही हैं कम करने। मनुष्य पुकारते भी है कि बाबा आओ आकर सृष्टि को कम करो। वह तो कुछ भी जानते ही नहीं हैं। बाप कितना कम कर देते हैं। बाकी थोड़े मनुष्य ज[illegible] रहते हैं। बाकी सभी आत्मायें अपने घर चली जाती है। फिर नम्बरवारपार्ट बजाने आती है। नाटक [illegible] का पार्ट देरी से होता है वह घर से भी देरी से आते हैं। अपना धंधा आद पूरा कर पिछाड़ी में आ[illegible] वाले अपना धंधा-धोरी आद भी करते हैं ना। फिर समय पर नाटक में आ जाते हैं पार्ट बजाने। तुम्हारा [illegible] है। पिछाड़ी में जिनका पार्ट है वह पिछाड़ी में ही आते हैं। पहले 2 शुरू के पार्टधारी जो हैं

वह सतयुग आद में आते हैं। पिछाड़ी देखो तो अभी आते रहते हैं। डर टारन्टालियां पत्ते आद पिछाड़ी तक आते रहते हैं। इस समय तुम बच्चों को ज्ञान की बातें समझाई जाती हैं। और सबेरे याद में बैठते हो। वह है ड्रील। आत्मा को अपने बाप को याद करना है। योग अक्षर छोड़ दो। इस से मुंझते हैं। कहते हैं हमारा योग नहीं लगता। बाप कहते हैं अरे बाप को याद करना क्या अच्छी बात नहीं है। याद न करेंगे तो पावन कैसे बनेंगे। बाप है ही पतित-पावन। साधु सन्त आद सभी गाते रहते हैं पतित-पावन ... तालियां बजाते गंगा में जाते हैं स्नान करने। भाषण आद करते हैं तो उन्हों को जो अपने हैं सभी को ले जाते हैं। उन्हों को आमदनी तो बहुत होती है ना। वह जाते हैं आमदनी के लिए। कफनी पहनी सन्यासी बने। फिर गृहस्थी लोग उन्हों को सभी कुछ पहनाते हैं। फायदा तो कुछ भी होता नहीं। वह है अनेक गुरु। सद्गुरु तो एक ही बेहद के बाप को कहा जाता है। सर्व व्यापी है कहकर भीतर में है फिर सद्गुरु कहां से आया। यह सभी हैं भक्ति की बातें। जिस से मनुष्य दुर्गति को पाते हैं। ऐसे नहीं कि डोरापा देना है कि भक्ति मार्ग का पार्ट ही क्यों रखा। नहीं। यह अनादी अविनाशी ड्रामा है। बाप आकर ड्रामा के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं। यह है वैराईटी धर्मों का, वैराईटी मनुष्यों का वृक्ष। तुम बच्चों की बुधि में यह याद है। सारी सृष्टि के जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी पार्टधारी हैं। जनावरों की तो बात ही नहीं। कितने ढेर मनुष्य हैं। हिसाब निकालते हैं ना। इस समय इतने मनुष्य हैं। हिसाब करते हैं कितनी वृधि होती है। वर्ष में इतने करोड़ पैदा हो हो जावेंगे। अभी इतने करोड़ बढ़ते जाये तो इतनी जगह ही कहां है। तब बाप कहते हैं मैं आता हूं। लिमिटेड नम्बर है। जब सभी आत्मायें आ जाती हैं, ऊपर हमारा घर खाली हो जाता है, मैं आ जाता हूं, तो मैं होते बाकी जो भी बचत आत्मायें ऊपर में है वह भी सभी आ जाते हैं। झाड़ कब सुखता नहीं। चलता आता है। पिछाड़ी में जब वहां कोई भी नहीं रहता है तो यह फिर झाड़ खत्म हो जावेगा। फिर सभी जावेंगे। नई दुनिया में कितने थोड़े हैं। अभी तो कितने ढेर हैं। शरीर तो सभी के बदलते जाते हैं। वह भी जन्म वही लेंगे जो कल्प2 लेते आये हैं। यह वर्ल्ड ड्रामा कैसे चलता है सिवाय बाप के कोई समझा न सके। बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। बेहद का नाटक कितना बड़ा है। कितने समझने की बातें हैं। बेहद का बाप तो सभी से ऊंचते ऊंच है। ज्ञान का सागर है। बाकी वह तो लिमिटेड है। वेद-शास्त्र बनते हैं। जास्ती तो कुछ बनेगा नहीं। तुम तो यह लिखते जाओ कितने ढेर कागज हो जाये। लम्बी-चौड़ी गीता बन जाये। शुरु से लेकर जो समझाते हैं वह तुम सभी लिख कर छपाते रहो तो इस मकान से भी बड़ी गीता हो जाये। कोई उठा भी न सके। छप भी न सके। इसलिए यह बड़ाई दे दी है कि सागर मस बनाओ सारा जंगल कलम बनाओ तो भी पूरा न हो। गायन भी है चिड़ियाओं ने सागर को हप किया। सुखा दिया। वह तो सभी हैं दन्त कथायें। तुम चिड़ियायें हो ना। ज्ञान सागर से तुम सारा ज्ञान हप कर रहे हो। हज़म करते जाते हो। कोई बहुत करते, कोई थोड़ा। बाकी ऐसे नहीं कि वह चिड़ियायें कोई सागर को सुखावेंगी। सभी बेकायदे कहानियां हैं भक्ति मार्ग के। अकल की बात नहीं। मनुष्य कितने बेअक्ल बन जाते हैं। इसलिए बाप ने कहा है जंगली जनावर बन पड़े हैं। तुम अभी क्या से क्या बनते हो। तुम ब्राह्मण बने हो। ज्ञान मिला है, तो तुम कितना जान गये हो। मनुष्यों को तुम समझाते हो तो भी विश्वास नहीं करते हैं कि ऐसे हो सकता होगा। कल्प2 तुम यह धंधा आद करते हो। पढ़ाई पढ़ाते हो। उन में कुछ भी कम जास्ती होनान है। जितना जो पुरुषार्थ करते हैं वह प्रारब्ध बनती है। हरेक समझते हैं कितना हम पुरुषार्थ करते हैं। कितना पद पाने लायक बन रहे हैं। स्कूल में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार इम्तहान पास करते हैं। तुम जानते हो सूर्यवंशी चन्द्रवंशी भी बनते हैं। जो नापास हो पड़ते हैं वह चन्द्रवंशी में चले जाते हैं। कोई समझ भी न सके कि राम को यह बाण आद क्यों दिये हैं। मारा-मारी की हिस्ट्री बना दी है। इस

समय है ही मारा-मारी। उस में सभी कुछ आ जाता है। सब से जास्ती मारा-मारी है काम कटारी की। मार-मार कर के आयु ही छोटी कर दी है। तुम जानते हो वहां हमारी आयु खुटती नहीं। एक शरीर छोड़ आपे ही लेते हैं। प्रजा में शरीर में छोड़ेंगे तो जानेंगे हम प्रजा में शरीर लेंगे। प्रिन्स होगा तो समझेंगे कि हम जाकर प्रिन्स बनेंगे। अज्ञान काल में ऐसे नहीं समझते हैं। बाकी हां जो जैसे कर्म करते हैं तो उनका फल मिलता है। जैसे कोई हास्पीटल बनाते हैं तो दूसरे जन्म में उनकी आयु बड़ी और तन्दुरुस्त होगी। कोई स्कूल बनाते कोई धर्मशाला बनाते हैं तो उनको एक जन्म लिए अल्प काल का सुख मिलता है। यहां तो बच्चे आते हैं। बाबा उन से पूछते हैं तुमको बच्चे कितने हैं। तो कहते हैं हमको तीन बच्चे हैं। एक वह है। क्योंकि वर्सा देता है और लेता है। हिसाब है ना। उनको कुछ लेने का तो नहीं है। चावल मुट्ठी लेकर महल देते हैं। इसी लिए उनको भोलानाथ कहा जाता है। शंकर को भोलानाथ नहीं कहेंगे। जिसके आगे कहते थे झोली भरदो। शिव और शंकर को इकट्ठा कर देते हैं। परन्तु शिव के आगे कब ऐसे नहीं कहेंगे झोली भर दो.... शंकर कोकहते हैं क्योंकि शिव को तो नाम-रूप से न्यारा कह देते हैं। शंकर के लिए कहते हैं आंख खोलने से ही विनाश कर देते हैं। वह सूक्ष्मवतन में, तुम यहां। फिर झोली कैसे भरेंगे। शंकर तो यहां आते ही नहीं। वह क्या आकर करेंगे। उनको तो ज्ञान सागर पतित-पावन नहीं कहा जाता है। तब बाप कहते हैं यह भक्ति मार्ग के जो भी चित्र हैं शास्त्र आद, है उन सभी का तुमको सार बताता हूं। भक्ति का फल देता हूं। भक्ति का फल होता है अल्प काल क्षण भंगुर। सन्यासी आद भी कहते हैं सुख काग विष्ठा समान है। इसलिए वह घर-बार छोड़ कर भागते हैं। कहते हैं हमको स्वर्ग के सुख चाहिए ही नहीं जो फिर नर्क में आना पड़े। हमको तो मोक्ष चाहिए।

तो यह बुधि में रखो यह बेहद का नाटक है। इस नाटक से एक भी आत्मा छूट नहीं सकती। यह अनादी खेल बना हुआ है। पहले से ही बना बनाया है। गाते हैं ना गती बनाई बन रही.... ड्रामा में नूंध है फिर तो चिन्ता की कोई बात ही नहीं। परन्तु मनुष्यों को भक्ति-मार्ग में चिन्ता करनी ही पड़ती है। जो कुछ भक्ति मार्ग में पास किया वह फिर भी होगा। यह भी जानते हो 84 का चक्र हम खाते रहते हैं। यह कब बन्द नहीं होता। ड्रामा बना बनाया है। इसमें तुम अपने पार्ट को उड़ा कैसे सकते हो। तुम्हारे कहने से थोड़े ही निकल जावेगा। मोक्ष को पाना, ज्योति ज्योत समाना, ब्रह्म में लीन होना यह भी एक मिथ्या है। जो समझाते हैं। अनेक मत-मतान्तर हैं ना। अनेक धर्म हैं। फिर कह देते तुमरी गत मत तुम्ही जानो। तुम्हारी श्रीमत से जो सदगति मिलती है सो तुम जानते हो। तुम जब आओ तो हम भी जाने। तुम जब आओ तो हम पावन भी बने, पढ़ाई पढ़े और हमारी सदगति हो। अभी तो है दुर्गति। सदगति हो जाती है फिर कोई बुलाते नहीं। यह भी मनुष्यों की बुधि में नहीं आता कि हमारी क्या दुर्गति हुई है। दुःखी भी बहुत हैं। बच्चे जानते हैं दुःखों की तो पहाड़ गिरनी है। खुनी नाहक खुल कहते हैं ना। गोवर्धन पहाड़ भी दिखाते हैं कि अंगुली से उठाया। अर्थ कुछ भी नहीं जानते। तुम थोड़े बच्चे सारा दुःख का पहाड़ बदल करके सोने का बना देते हो। तुम्हारा पार्ट जानते हैं। तुम्हारी महिमा भी जानते हैं। मैजोरिटी है ना। दुःख भी सहन करते हो। अभी तुम बच्चों को सभी को वसीकरण मंत्र देना है। कहते हैं ना तुलसी दा चन्दन घीसे तिलक देते रघुवीर.. तिलक तो तुमको मिलता है। तिलक तो बेशक पाते हो परन्तु अपनी2 मेहनत से। यह राजयोग है ना। तुम राजाई के लिए पढ़ रहे हो। सन्यासी तो राजाई पढ़ा न सके। राजाई पढ़ाने वाला एक ही बाप है। अभी तुम घर में बैठे हो। इनको दरकार भी नहीं कहेंगे। दरबार होती है [illegible] जहां प्रिन्स-प्रिंसेज आपस में मिलते हैं। इनको स्कूल ही कहते। पाठशाला है। कोई ब्राह्मणी [illegible] नहीं ले आ सकती। इस पर एक कहानी भी है ना। पतित वायुमंडल को खराब कर देंगे।

इसलिए अलो नहीं करते हैं जब पवित्र बने। अभी तो अलो करते हो। अगर तुम पावन बने तो ठीक पतित बने तो नीचे गिर पड़ेंगे। फिर धारणा नहीं होगी। यह हुआ अपन को आपे ही सरापित करना रावण मत पर। विकार है ही रावण मत। राम की मत छोड़ा रावण की मत से विकारी बनें पत्थर बुधि बन जाते हैं। शास्त्रों में तो कहानियां कितनी लिख दी है। रोचक बातें बहुत हैं। रोचक बातें सुना कर बहुत डराते हैं। जैसे गरुड़ पुराण है। उनको रोचक पुस्तक कहा जाता है। बाप कहते हैं मनुष्य तो मनुष्य ही बनता है। बाकी कोई फादर आद नहीं बनते। शास्त्रों में कितनी अन्धश्रधा की बातें हैं। उनको कहा जाता है अन्धश्रधा का मार्ग। पढ़ाई में तो अन्धश्रधा होती नहीं। स्टुडन्ट जाते ही हैं पढ़ने लिए। पास होकर पैसा पैदा करेंगे। यह कोई अन्धश्रधा नहीं है। भगवान पास तुम आये हो पढ़ने लिए। बाबा टीचर भी फिर सदगुरु भी है। सुप्रीम बाप है। परम को सुप्रीम कहा जाता है। लौकिक बाप को परम नहीं कहा जाता। परम पिता परम टीचर, परम सदगुरु ऊंच ते ऊंच एक ही हैं। वह पढ़ावेंगे तो जरूर ऊंच ते ऊंच पद मिलेगा। भगवान पढ़ाते हैं यह भी बुधि में रहना चाहिए ना। भारत में यह देवी देवतायें ही हैं जिनको विलायत वाले भी भगवान भगवती कहते हैं। परन्तु बाप समझाते हैं भगवान भगवती कह न सके। यह तो आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। तुम जानते हो यही पत्थर बुधि थे। फिर बाबा ने पढ़ा कर पारस बुधि बनाया। दुनिया में यह कोई नहीं जानते। रामचन्द्र भी नापास हुआ ना। पहले तो जरूर दास-दासियां ही बनना पड़े ल०ना० के आगे। फिर पीछे ऊंच मर्तबा मिलेगा। न पढ़े हुये हैं तो दास दासियां जरूर बनना पड़े। बाप बैठ समझाते हैं। यह कथा है ही नर से नारायण बनने की। राम सीता बनने की नहीं। एक ही बात। यकी बोली या हुसेन। तुम कहते भी हो हम तो नर से नारायण बनेंगे। सत्य ना० की कथा सुन रहे हो। सत्य नारायण की कथा सुनी है राम सीता बनने की कथा सुनी नहीं है। तुम सत्य ना० की ही कथा जन्म व जन्म सुनते आये हो। सब से ज्यादा कथा किसने सुनी होगी। तुम कहेंगे हम ने। क्योंकि बहुत भक्ति हमने ही की है। भगवान फल भी इन्हों को ही देंगे। जिन्होंने बहुत भक्ति की है। वही झट समझ कर और सर्विस पर लग जाते हैं। भक्ति कम थोड़े की है तो समझते नहीं। तुम जानते हो पहले2 हम ने शिव बाबा का मंदिर बनाया। अव्यभिचारी भक्ति की। आधा कल्प तुम ने भक्ति की है। तो राज्य भी तुमको मिलता है। यह समझ की बात है ना। प्रदर्शनी आद पर जांच करो। लिखते हैं बाबा सेटीसफाय होकर जाते हैं। बाबा लिख देते हैं पूरा भक्त नहीं हैं। जिसने पहले शिव बाबा की भक्ति की है, निश्चय है शिव बाबा पढ़ाते हैं तो झट बाबा के पास भागे। बाबा पूछते हैं कब निश्चय हुआ कि बाप आये हैं। पहले तो उन से मिलना चाहिए ना। हां कोई2 को बहुत खवास होती है मिलने की। कोई को तो खयाल भी नहीं आता। तब ही बाबा पूछते हैं आते तो रहे परन्तु निश्चय कब हुआ? बाबा समझ जाते हैं पुराना भक्त नहीं हैं। हिसाब है ना। इसमें कितनी विशाल बुधि चाहिए। पुराने भक्त इस ज्ञान को चटक पड़ेंगे। दिन प्रति दिन यह नालेज लगता जावेगा। क्योंकि तुम जितना याद में रहेंगे उतनी ही ताकत आवेगी। सभी का ताला खुलता जावेगा। परन्तु जब इतनी ताकत आवे। जौहर भरे। आगे चल तुम समझेंगे सृष्टि कैसे बदलती है। हम कैसे ट्रान्सफर होते हैं। अभी टाईम पड़ा है। फिर मालूम पड़ जावेगा कौन2 माला का दाना बनते हैं। अभी तो अवस्थायें ऊपर नीचे होती रहती है। इसलिए ब्रह्मणों की माला नहीं बनती। तुम जब पास होते हो तो रुद्र माला बनती है। पुरुषार्थ करना है। कहते भी हैं नर से ना० बने। अर्थात रुद्र माला में जावें तो उनको भी याद करना पड़े ना। याद करते2 पाप कट जावेंगे। भक्ति माला में सब से तीखा नारद था। हम ल० को वर सकते हैं, तो उनको कहा अपने को देखो। तो सिकल देखी हम तो बन्दर हैं हम कैसे ल० को वर सकेंगे। ज्ञान बिगर तो कुछ हो न सके। मुख्य है याद की यात्रा। तो कट उतर जाये। यही फिकरात बच्चों को रहनी चाहिए। फिर 2। जन्म फिक्र से फारग हो जावेंगे। स्टुडन्ट को फिकर फिकरात रहती है हम पास विथ आनर होवें। है ईश्वरीय रस। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।